Bihar Board Class 7 Sanskrit Notes Chapter 14 बोधगया

बोधगया Summary

[बौद्धधर्म अन्तरराष्ट्रीय स्थिति के कारण महत्त्वपूर्ण है । इस धर्म के अनुयायी बोधगया को भगवान् बुद्ध को ज्ञानस्थली के कारण बहुत आदर की दृष्टि से देखते हैं तथा यहाँ की यात्रा को अपने जीवन का परम लक्ष्य मानते हैं । बोधगया में भगवान बुद्ध का प्राय: चौदह सौ वर्ष पुराना मन्दिर तथा बोधि वृक्ष वर्तमान है । प्रस्तुत पाठ में बोधगया के धार्मिक महत्त्व तथा वर्तमान परिवेश का संक्षिप्त परिचय है ।

बिहारराज्यस्य गयामण्डले ..... तस्य दर्शनाय आयान्ति ।

शब्दार्थ-बिहारराज्यस्य = बिहार राज्य के । गयामण्डले = गया जिले में । अवस्थितः – स्थित । महतीम् = बड़ी (को) । बोधिम् – ज्ञान को । प्राप्तवान् – प्राप्त किया । ततः परम् = उसके बाद । धारयन्ति – धारण करते हैं/करती हैं । अश्वत्थवृक्षः – पीपल का पेड़ । तस्यैव (तस्य + एव) – उसका ही/ उसी का । छायायाम् = छाया में । कृतवान् – किया । तस्मिन् – उसमें । पद्मासने = कमलासन / पद्मासन की अवस्था में । उपविष्टस्य – बैठे हुए का / की । पाषाणमूर्तिः – पत्थर की मूर्ति । सहस्राधिकाः – हजार से अधिक । दर्शनाय – दर्शन के, लिए । आयान्ति = आते हैं।

सरलार्थ-बिहार राज्य के गया जिला में स्थित बोधगया नामक गाँव आज बड़ी प्रसिद्धि प्राप्त कर रहा है । यहीं राजकुमार सिद्धार्थ ने वैशाख पूर्णिमा को ज्ञान प्राप्त किया । इसके पश्चात् वे भगवान् बुद्ध के नाम से प्रसिद्ध हो गए। बौद्धधर्म के सभी उपासक बोधगया के प्रति श्रद्धा धारण करते हैं। आज वहाँ पुराना पीपल का पेड़ है । उसी की छाया में बुद्ध ने तप किया । उस वृक्ष के समीप में ही बुद्ध का प्राचीन महाबोधि मंदिर है । मन्दिर में पद्मासन की अवस्था में बैठे हुए बुद्ध का पत्थर की मूर्ति है । प्रतिदिन हजारों से अधिक भक्तगण उनके दर्शन के लिए आते हैं।

तस्य मन्दिरस्य परिसरः ..... परिसरस्य भ्रमणं कुर्याम ।

शब्दार्थ-परिसरः – आहाता, स्थान । करुणा – दया । सम्प्रति – इस – समय । निवासिभिः = निवासियों के द्वारा । कृतानि – बनाये गये । शोभन्ने = शोभते हैं । तत्रैव (तत्र + एव) वहीं । अधुना – आजकल । रमणीयम् .. – सुन्दर, मनमोहक । दर्शनीयम् – दर्शन योग्य । स्थलम् – जगह । स्वच्छता । – सफाई। वर्ष यावत् = सालों भर / पूरे साल । पर्यटकाः – यात्री । आत्मानम् = अपने आप को । मन्यन्ते – मानते हैं। समझते हैं । पार्वे – बगल में । प्रवहति – बहती है । शुष्यति = सूख जाती/ जाता है । विकासाय – विकास के लिए । विकास को। भ्रमणम् – घूमना / घूमने का कार्य । परिसरस्य – आहाते का । कुर्याम = (हम) करें ।

सरलार्थ – उस मन्दिर के आहाता शान्तिमय और दया युक्त है । बोधगया में इस समय विभिन्न देशों को निवासियों द्वारा बनाए गए बुद्ध मन्दिर शोभायमान है । जैसे म्यांमार (बर्मा) मन्दिर, थाईमन्दिर, तिब्बत मन्दिर, जापान मन्दिर आदि । वहीं ही मगध विश्वविद्यालय का मुख्य आहाता है । आजकल बोधगया मनमोहक और दर्शनीय स्थान है ।

पूरे आहाता की सफाई और परिवहन की व्यवस्था सुन्दर है । वर्ष भर पर्यटक बोधगया जाकर अपने को धन्य मानते हैं । यहाँ समीप में ही निरंजना नामक नदी बहती है । गर्मी में वह सूख जाती है । प्रशासन बोध गया के विकास के लिए निरन्तर प्रयत्न कर रहा है । हमलोग भी वहाँ जाकर आहाता का दर्शन करें ।

https://www.evidyarthi.in/

व्याकरणम्

सन्धि-विच्छेदः

1. तस्यैव = तस्य + एव (वृद्धि सन्धि, स्वर सन्धि)
2. पद्मासने = पद्म + आसने (दीर्घ सन्धि, स्वर सन्धि)
3. करुणायुक्तश्च = करुणायुक्तः + च (विसर्ग सन्धि)
4. सहस्राधिकाः = सहस्र + अधिकाः (दीर्घ सन्धि, स्वर सन्धि)

प्रकृति – प्रत्यय-विभागः

प्राप्नोति	=	प्र + $\sqrt{\text{आप्}}$, लट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन
प्राप्तवान्	=	प्र + $\sqrt{\text{आप्}}$ + क्तवतु (पुं)
धारयन्ति	=	$\sqrt{\text{धृ}}$ + णिच् लट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन
वर्तते	=	$\sqrt{\text{वृत्}}$, लट् लकार, प्रथम पुरुष एकवचन
आयान्ति	=	आ + $\sqrt{\text{या}}$, लट् लकार, प्रथम पुरुष, बहुवचन
शोभन्ते	=	$\sqrt{\text{शुभ्}}$, लट् लकार, प्रथम पुरुष, बहुवचन
करोति	=	$\sqrt{\text{कृ}}$, लट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन
कुर्याम	=	$\sqrt{\text{कृ}}$, विधिलिङ्, उत्तम पुरुष, बहुवचन

https://www.evidyarthi.in/